%%A. D. 1190 ― 1435

%%(From 5-2-1310 To 7-4-1353 A.D.)

%% p. 468

NO. 266

Lakshmī-Narasiṃha Temple at Siṃhāchalaṃ<1>

( S. I. I. Vol. VI, No. 1052; A. R. No. 332 XLII of 1899 )

Ś. 1272

(१।) स्वस्ति श्रीम[त] गंगावाये सु[वि]मलचरिते सूर्य्यवंशप्रकाशे वीरक्ष्मापो नृसिहोवनपति .........श्रीवाणीवल्लभस्य । प्रकटि

(२।) तयशसस्तस्य राज्ञी पदान्वादेवी गंगाभिधानामरपति दइतासन्निभा सत गुणाढ्या [।। १] शाकाद्दे [वा]हु-भूभृ द्दप[ति]गणिते कार्त्तिके भौमवारे शुक्लैकादश्युपेते हरि-

(३।) शिखरिपते[ः] श्रीनृसिहस्य नित्य[ं] भोगं गंगानृसिंहाभदमधिकमहाराज्यवृध्ये स्वभर्त्तुः प्रादात् सौभाग्यसंपत् सुतनय[यशसोवाप्तये] पुण्यसिष्यै । [२] ग्रामानाचंद्रतारं स्ववि-

(४।) रचित महाभोगसंसिद्धयेष्टा दत्वा नानाविधान सम्य[क्]रुचिमदखिलान् हृद्य नैवेद्यस घान् । [ए]तस्मि[न्] संगीतहेतो वंसु-शशिगणितायोषितायोषित स्सुंदरां-

(५।) गीः प्रादाद्वे हेमदंडव्यज[न] घृतिकृते कर्म्मणे चाष्टसंख्यः । [३] श्रीशकवरुषंवुलु १२७२ गु नेंटि कार्त्तिक शुद्ध एकादशियु मंगलवार<2>मुनांडु [वीरन]-

<1. In the fortieth niche of the verandah round the central shrine of this temple.>

<2. The corresponding date is the 12th October, 1350 A. D., Tuesday.

%%p. 469

(६।) रविसिंहदेवराजुल<1> महादेवि गंगामहादेवि तनकु अभीष्टार्त्थसिद्धिगानु श्रीनरसिंह्यनाथुनिकि समर्प्पणचेसिन गंगानरसिंहभोगानकु कलिंग्गदेशम-

(७।) दु[न] एरदविषयाननु तांड्रंगि मोंपाऋ पिनकेल्ल करटमु वेलंगाऋ वेंटि गारपल्लि । पार्व्वतिभोगाननु द्रोमि[णि]नांटि गोवलु एनिमिदि ८ पहिडि चेरकुलु वे-

(८।) लपात्र ... सरा कीरि पहिंडिकाम चामरलु रेंडुगा ।। वेंडि च(स)रकुलु सहस्रधार तलियलु पप्पपात्रलु पिन[इ]ड्येन दीपदंडल्ल [५] कंचु वल्यरालु ८ गोप कंचु

(९।) त वागरायालु ४ ई न[न्न]त १ ई भोगपरीक्ष जनार्द्दनमहासेनापतुलु भोगानकै गोलिचिंड [स्त्री अज्जनसुं]दरा<2>लभणसुंदरा कंचिसुंदरा गौरासुद रा लकुम-

(१०।) अर्ज्जुनसु दरा राजुसुंदरा सटुसुंदरा वीरु एनुम ऋन्नु पात्र[लु] माणिकसुंदरा मुग्धासुदरा मदतिकत्यलु गाईणि तारासु दरा सानमा-

(११।) निकसुंदरा [तूकिन]मुन्नु कंस्यदालमुन्नु वाइचिंटि कंदिसुंदरा शेखुन्नु कंस्यतालमुन्नु वाइंचिटि यमुसुंदरा आवर्जमुन्नु [भे]रिनि वाइंचिटि जानकसु द-

(१२।) रा मिह्वरि वाइंचुटि उमा {।} सु दरा [ब्रह्मम]हुरिन्नि सूमंतकाहलिन्नि वाइंचिटि तुलसामादुनु चामरलु पटिडिवारु पिराट्टि[दे]विकि काहलिपटिडि भांकसुम-

<1. He is Narasimhadeva-III (A. D. 1327-8 --- 1352-3).>

<2. The family title ‘Sundara’ is still used in Orissa. In some villages near Bhubaneswar, some Khaṇḍāit families use this title.>

%%p. 470

(१३।) द्र [ए]ड्डपात्र ई नालुवुरुन्नु माणिकालु वीरिकि इदरुकुन्नु ल्लु तोंपु तोटमाकटिचेनु नंव्यलु परिचा[र]कु[लुन्नु] पत्रिचेऋ हरपि या रे[ं]डु कोलुवुलुन्नु जरि [पिं] पुनकु

(१४।) वीरचतवैद्यभल्लु पुरुषसूक्तनिवंधमु वललारु वरदयं गारिकि जलकनिवंधमु भागवत केशव[भट्ल]कु अलवट्टनिवंधमु श्रीरं[ग]नाथुनिकि [दि]व्यको-

(१५।) [लुवु] निवंधमु पेट्टिन [वाल]कु ओड्यस्वरुलकु ... ... .. त्रमु [एंडा]दि जीतमु ... ... ...

(१६।) <\*>वारिकि पेट्टेनु .. ट्टुवारि लक्ष्मीदासु नित्यमुन्नु महासुदांधफल पेटुवांडु .. रु ... ... ...

(१७।) [ना]नकु तिरुतोमाल पेटिडिवारु विसुवालिग गु .. नमाल सुवंडुन्नु वीरि ... ... ...

(१८।) शत्रुरेव हि शत्रुस्याद्धर्म्म श्शत्रुन्नं कस्यचितु[त्] मंगलमहा श्री श्री श्री [।।]

<\* The last portion of these lines, engraved on the next slab, are covered by another inscription written over them.>